# इकाई 9 बाल्यावस्था

**इकाई की रूपरेखा**

9.1 प्रस्तावना
9.2 उद्देष्य
9.3 बच्चे और वयस्क की संकल्पनाएँ
9.3.1 बच्चा किसे कहेंगे?
9.3.2 बच्चे की विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में परिभाषा
9.3.3 एक बच्चे और एक वयस्क के बीच अंतर
9.4 वयस्क–बच्चे के बीच संबंध
9.5 बाल्यावस्था
9.5.1 बाल्यावस्था की सामान्यताएँ
9.5.2 बाल्यावस्था की विविधताएँ
9.5.3 बाल्यावस्था की विभिन्न सामाजिक वर्गों/समुदायों में संकल्पना
9.6 विशिष्ट समुदाय के बच्चों का प्रालेख (प्रोफाइल)
9.6.1 खानाबदोष (यायावर) समुदाय का बच्चा
9.6.2 नेपाली भाषी–भुटानी बच्चे का प्रालेख
9.6.3 द्वंद स्थिति में बच्चा
9.7 बच्चों और बाल्यावस्था का अध्ययन करना
9.8 सारांष
9.9 इकाई के अंत में अभ्यास
9.10 बोध प्रष्नों के उत्तर
9.11 पठनीय सामग्री

## 9.1 प्रस्तावना

बच्चा किसे कहेंगे? समाज बच्चे और वयस्क के बीच अंतर कैसे करता है? ऐसा अंतर वयस्क और बच्चों को किस प्रकार प्रभावित करता है? क्या न्याय, समता और समानता की संकल्पनाओं के साथ इसका संबंध है? इस इकाई में ऐसे प्रष्नों पर विचार किया गया है और यह "बच्चा", बाल्यावस्था और वयस्क की अवधारणाओं पर प्रकाष डालने में भी सहायक होगी। इस इकाई को पढ़ते हुए जिन बच्चों के साथ आप प्रतिदिन अंतःक्रिया करते हैं उनके बारे में तथा अपने बचपन को भी इन संकल्पनाओं और इकाई में प्रस्तुत विचारों के आषय को समझने में सहायक होंगे।

## 9.2 उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपः

- बच्चा और बाल्यावस्था की अवधारणाओं का वर्णन कर सकेंगे;
- वयस्क और बच्चे के बीच संबंध को समझ सकेंगे;
- बाल्यावस्था की समानताओं और विविधताओं की चर्चा कर सकेंगे;

- विभिन्न सामाजिक वर्गों/समुदायों में बाल्यावस्था की स्थिति से अवगत हो सकेंगे;
- बाल्यावस्था का उनकी गतिविधियों/क्रियाकलापों के माध्यम से अध्ययन करने में रुचि विकसित कर सकेंगे; और
- विशिष्ट समुदाय के बच्चों के स्थिति चित्रण (प्रोफाइल) को पहचान सकेंगे।

## 9.3 बच्चे और वयस्क की संकल्पनाएँ

### 9.3.1 बच्चा किसे कहेंगे?

बच्चा और बाल्यावस्था हम सबके लिए सर्वाधिक परिचित शब्द प्रतीत होते हैं। हम सब भी उस उम्र में रहे हैं जब हम **बच्चे** कहलाते थे और हमने उस चरण (phase) का अनुभव भी किया है जिसे **बाल्यावस्था** कहा गया। हम अपने रोजमर्रा के जीवन में अपने आसपास बच्चों को देखते हैं, उनके साथ अन्तःक्रिया (बातचीत) करते हैं और जो बड़े हो गए हैं उन्हें वयस्कों या व्यक्तियों के रूप में षिक्षित करने का हम प्रयास करते हैं। उनका अवलोकन करते हैं। यह प्रतीत होता है कि हम सभी को बच्चों और बाल्यावस्था की कुछ जानकारी होगी। आइए, कुछ स्थितियों के बारे में विचार करें।

अधिकतर अध्यापक विविध पृष्ठभूमि के बच्चों के साथ कार्य करते हैं। कुछ बच्चों पर चिल्लाते हैं, कुछ उनसे बातचीत करके समस्या सुलझाने का प्रयास करते हैं और कुछ अनदेखा कर देते हैं। विविध परिप्रेक्ष्यों के बच्चों को सम्हालना बहुत आसान नहीं है। यह हमारा सामना उस वास्तविकता से कराता है जो हमें बताता है कि हम प्रौढ़ और अध्यापक के रूप में कक्षाकक्ष परिस्थितियों को समझने में पारंगत नहीं है। एक ही स्थान पर विभिन्न परिस्थितियों का होना, हमारे इन परिप्रेक्ष्यों में सही से शामिल न हो पाने को ही रेखांकित करता है। क्या आपको लगता है कि ऐसी परिस्थितियों का बच्चों की सामाजिक स्थिति से कुछ लेना–देना है?

इस इकाई में हम इस दिषा में शुरुआत करने के लिए बच्चे और बाल्यावस्था की धारणाओं के बारे में विचार करेंगे जिसकी चर्चा आगामी इकाइयों में की जाएगी।

### 9.3.2 बच्चे की विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में परिभाषा

वयस्कों के रूप में हम यह महसूस करते हैं कि हम बाल्यावस्था और बच्चों के अनुभवों को अच्छी प्रकार समझते हैं। आइए, अपने आप से कुछ प्रष्न पूछें। क्या हम "बाल्यावस्था" को परिभाषित कर सकते हैं? हम सभी बच्चे रहे हैंः तो क्या हमारे लिए बच्चे की "परिभाषा देना" संभव होगा? कुछ लोग कह सकते हैं कि वे ऐसा कर सकते हैं। अधिकतर लोग बाल्यावस्था और बच्चों का वर्णन करने के लिए निम्नलिखित विशेषणों का प्रयोग कर सकते हैंः

**बच्चे होते हैंः**

निष्कपट, ईष्वर की देन, पवित्र और सच्चे, मधुर, आकर्षक,
विनोदषील, "बचकाना", मजाकिया, बेवकूफ, शरारती,
सुकुमार, संरक्षित, कुम्हार की मिट्टी की तरह कोमल,

**बाल्यावस्था होती हैः**

कोमल आयु, जीवन का सर्वाधिक सुरक्षित समय,
स्वतंत्र, आश्रित,
जीवन में सर्वाधिक आनंददायक अवस्था, आमोद–प्रमोद की आयु

ये कुछ सामान्य विचार हैं जो हममें से अधिकांष बच्चों और बाल्यावस्था के संबंध में रखते हैं। यदि बहुत निकट से हम इन धारणाओं की छानबीन करें तो हमें ज्ञात होगा कि ये बच्चों के अनुभवों का समुचित वर्णन नहीं करते। कुछ बच्चें वंचित परिवेष से संबंध रखते हैं और उनका एक अलग अनुभव है। क्या आपके विचार में सभी बच्चे जिनमें धनी परिवारों से संबंध रखने वाले बच्चे भी शामिल हैं, का एक जैसा अनुभव है? हम कह सकते हैं कि ऐसा नहीं हो सकता है लेकिन हम निष्चित रूप से कुछ भी नहीं कह सकते। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रत्येक बच्चे के रहन–सहन की भिन्न–भिन्न परिस्थितियाँ होती हैं। चूँकि बच्चों के अनुभव भिन्न–भिन्न होते हैं, इसलिए एक श्रेणी के रूप में बच्चों के बारे में सोच–विचार करना और बाल्यावस्था का केवल एक अर्थ लगाना अथवा 'परिभाषित' करना जटिल होगा। यह हममें से कुछ को भले कुछ असाधारण लगे, परंतु बच्चे और बाल्यावस्था के बारे में अलग–अलग और परस्पर–विरोधी परिप्रेक्ष्य भी हैं। यद्यपि, आप खंड 2 की **इकाई 5ः विकास : एक परिचय** में बच्चे और बाल्यावस्था की धारणा के बारे में पढ़ चुके हैं, फिर भी उन्हें पुनः स्मरण करने की आवष्यकता है।

i) **आयु की कसौटी अथवा मानदंड (age criterion):** सामान्य तौर पर **'आयु'** बच्चे और बाल्यावस्था को परिभाषित करने की कसौटी होती है। साधारणतया, जन्म से बच्चे और बाल्यावस्था को आयु के आधार पर परिभाषित किया जाता है। मानव को वयःसंधि (यौवनावस्था) के आरंभ होने तक बच्चा ही समझा जाता है अर्थात औसत बच्चा जन्म से 13 वर्ष तक की आयु अवधि का होता है। अतः बाल्यावस्था ही यह आयु अवधि होती है जो जन्म से यौवनारंभ तक होती है।

   आयु की सीमा रेखा के बारे में बहस होती रही है। कुछ लोगों का मानना है कि बच्चे के अस्तित्व में आते ही अर्थात् भ्रूण अवस्था में ही जन्म लेने से पहले **बाल्यावस्था** आरंभ हो जाती है। यह भी एक कारण है कि अनेक देषों में बच्चे के विकास में एक विशेष अवस्था के पष्चात 'भ्रूण' की हत्या करना एक अपराध है। इसके अतिरिक्त, कुछ लोगों का तर्क है कि **बाल्यावस्था** उस अवधि तक होती है जब तक व्यक्ति (बच्चे) को **'वयस्कों'** के रूप में सभी कानूनी अधिकार प्राप्त नहीं हो जाते। इसका अर्थ है कि एक व्यक्ति को जब तक एक वयस्क के रूप में कानूनी रूप से मान्यता नहीं मिल जातीं तब तक वह बच्चा है। भारत में इसका अर्थ होगा कि 18 वर्ष की आयु तक व्यक्ति बच्चा है।

ii) **कानूनी दृष्टिकोण (Legal View) : बच्चों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र संधिपत्र** बच्चे को 18 वर्ष से कम आयु वाले व्यक्ति के रूप में परिभाषित करती है। भारत में **किषोर न्याय अधिनियम** 14 वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों को बच्चा मानता है जबकि **षिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2009** की इस परिभाषा में आयु के दायरे को और संकीर्ण कर दिया गया है। इस अधिनियम के अनुसार 6 से 14 वर्ष तक की आयु के अंतर्गत आने वाला व्यक्ति बच्चा है। भारतीय संविधान के सिद्धांत और अधिनियम बच्चे की अलग–अलग आयु सीमाएँ निर्धारित करते हैं। भारत के संविधान का **अनुच्छेद 21ए** कहता है कि राज्य 6 से 14 वर्ष तक के प्रत्येक बच्चे को, जैसा कि वह विधि द्वारा निर्धारित करे, अनिवार्य और निःषुल्क षिक्षा उपलब्ध कराएगा। संविधान का **अनुच्छेद 45** विनिर्दिष्ट करता है कि बच्चे के 6 वर्ष के होने तक राज्य सभी बच्चों को प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और षिक्षा प्रदान करने का प्रयास करेगा। **बाल श्रम निषेध और विनियमन अधिनियम, 1986** के अंतर्गत बच्चा वह है जो 14 वर्ष का नहीं हुआ है या 14 वर्ष से कम आयु का है। **भारतीय खनन अधिनियम** 18 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति को बच्चा मानता है। यदि हम इन अधिनियमों या अनुच्छेदों पर नज़र डालें तो हमें बच्चों की कोई एक समान आयु सीमा इसमें दृष्टिगत नहीं हो सकती।

यह अवलोकन करना रोचक होगा कि पूरे विष्व में कानूनी वयस्कता (legal adulthood) के लिए आयु अलग–अलग है। भारत में यह 18 वर्ष, ईरान में 15 वर्ष, स्काटलैंड में यह 16 वर्ष है जबकि जापान में यह 20 वर्ष है और मिस्र में यह 21 वर्ष है। आपके विचार में जीवन के संबंध में कानूनी आयु के निहितार्थ क्या हैं? कानूनी वयस्कता प्राप्त करने तक, व्यक्ति (बच्चा) संरक्षित नागरिक है। अतः, बच्चे अथवा अवयस्क अपने अभिभावकों और सरकार का दायित्व हैं? उनका भोजन और स्वास्थ्य, वस्त्र और आवास, षिक्षा और अच्छा जीवन अभिभावकों और सरकार के उत्तरदायित्व हैं। एक वयस्क व्यक्ति की आयु प्राप्त करने के पष्चात, व्यक्ति कानूनी रूप से अपने लिए उत्तरदायी होता है। व्यक्ति रोजगार प्राप्त कर सकता है, मतदान कर सकता है, चुनाव लड़ सकता है, विवाह कर सकता है, मुकदमा कर सकता है, संपत्ति खरीद सकता है, वाहन आदि चला सकता है। परंतु इस कानूनी कसौटी में अनेक अंतर्विरोध हैं। उदाहरण के लिए, भारत में कार्य करने की कानूनन आयु 14 वर्ष है। इस अवस्था में 'बच्चा' न तो मतदान कर सकता है और न ही उसके पास वयस्क अधिकार होते हैं। वह व्यक्ति जिसे वयस्क के रूप में अधिकार प्राप्त नहीं हैं, रोजगार के प्रति असंवेदनशील और असुरक्षित होगा। क्या आपके विचार में शारीरिक और मानसिक रूप से 14 वर्ष तक की आयु के बच्चे को मजदूरी के काम में लगाना स्वास्थ्यकर है?

iii) **एक श्रमिक के रूप में बच्चा (child as a labour):** इस तथ्य के बावजूद कि बाल श्रम ग़ैर–कानूनी है, असंख्य बच्चे कारखानों (कालीन बुनना, बीड़ी बनाना, चूड़ी बनाना, पटाखों के कारखानों आदि में काम करना), छोटी–छोटी दुकान और घरेलू काम–धंधे जैसे घर की सफाई करना, खाना बनाना, बच्चों की देखभाल करना, आदि करते हैं। अनेक बच्चे ऐसी स्थितियों में भी होते हैं जिनमें उन्हें भीख माँगनी पड़ती है। ऐसी भी स्थितियाँ हैं जहाँ बच्चों को वेश्यावृत्ति में धकेल दिया जाता है। गरीबी में बीतने वाला बचपन, घरेलू परिस्थितियों में बच्चों के अनुभव बेहतर स्थितियों से भिन्न होते हैं। ऐसे मामलों में बच्चों को परिवार की अर्थव्यवस्था में सहायक अथवा अपनी आजीविका के लिए उत्तरदायी माना जाता है। अधिकतर, ऐसी स्थितियों में बच्चे वयस्कों से बहुत अलग नहीं होते।

> आज विष्व में रहने वाले ऐसे भी लोग हैं जिन्हें निष्पक्ष मुकदमे का कोई कानूनी अधिकार नहीं है, जो उस प्रक्रिया में भागीदारी से वंचित हैं जो उन पर नियंत्रण करती हैं और जो दूसरों के अधिकार के अधीन हैं जो दंडित हुए बिना उनके साथ दुर्व्यवहार, दुरुपयोग अथवा शोषण कर सकते हैं। ये बाल्यावस्था के कैदी हैं।
>
> जोह्नहॉल्ट (1974), एस्केप फ्रॉम चाइल्डहुड

iv) **इतिहास में बाल्यावस्था (Childhood in History):** यदि कोई व्यक्ति इतिहास का विश्लेषण करे तो उसे पता चल पाएगा कि बच्चों का अर्थ और विवरण इतिहास में विभिन्न समयावधियों में अलग–अलग है। फिलिप एरीज नामक फ्रांसीसी इतिहासकार ने विश्लेषण किया कि बच्चों को इतिहास में किस प्रकार चित्रित किया गया था। कलाकृतियों (कार्यों), अक्षरों और अनेक स्रोतों का प्रयोग करके उसने पता लगाया कि मध्यकाल से लेकर अब तक बाल्यावस्था का अर्थ किस प्रकार विकसित हुआ। निम्नलिखित बॉक्स (खाने) में दिया गया उद्धरण पढ़िएः

फिलिप एरीज़ ने लिखा था कि बाल्यावस्था एक अत्यंत नई अवधारणा है। यह मध्यकाल में विद्यमान नहीं थी। उन्होंने पाया कि उस युग की चित्रकारी में कोई भी बच्चे चित्रित नहीं थे। या तो केवल बहुत छोटे षिषु या वयस्क चित्रित थे। वे सभी जो षिषु नहीं थे, वे वयस्क शारीरिक भाषा और वयस्क जैसी अभिव्यक्तियों के साथ वयस्क वेशभूषा में चित्रित किए गए थे। सर्वाधिक छोटे व्यक्तियों (बच्चों) को प्रषिक्षण दिया जाता था, वे खेतों में श्रमिक बनते थे और बहुत ही कम आयु से ही वयस्कों की भूमिका निभाते थे। यहाँ तक कि लगभग सात वर्ष के 'व्यक्तियों' को बच्चों के रूप में नहीं, बल्कि छोटे वयस्कों के रूप में देखा जाता था।

मध्यकालीन संस्कृतियों में बाल्यावस्था की अवधारणा की कमी थी। बाल्यावस्था बाद का ऐतिहासिक सृजन है। यह 16वीं और 17वीं शताब्दियों में धनी लोगों (उच्च श्रेणी) के साथ अस्तित्व में आया। यह उच्च श्रेणी में 18वीं शताब्दी में आगे विकसित हुआ और अंत में इसका उच्च और निम्न श्रेणियों दोनों में 20वीं शताब्दी में अभ्युदय हुआ।

एक बार जब बाल्यावस्था जैसी संस्था ने स्वरूप लेना आरंभ किया, समाज में छोटे व्यक्ति की स्थिति बदलना आरंभ हो गई। बच्चों को वयस्क वास्तविकता (adult reality) से बचाना था। बच्चे से जन्म, मृत्यु, लिंग, त्रासदी (tragedy) और वयस्क दुनिया की घटनाओं को छिपाना था। बच्चों को आयु के मापदंड से अलग किया गया।

फिलिप एरीज (1962) सेंचुरीज ऑफ चाइल्डहुड

एक अन्य विचारक जोह्न हॉल्ट आधुनिक समाज में छोटे व्यक्तियों (बच्चों) और उनके स्थान अथवा स्थान की कमी के बारे में लिखते हैं। वह आधुनिक बाल्यावस्था को संस्था, दृष्टिकोण, रीति–रिवाजों और आधुनिक जीवन में बच्चों को परिभाषित और उन्हें खोजने वाले कानूनों के बारे में बात करते हैं तथा व्यापक सीमा तक उनका जीवन किस प्रकार का है एवं हम तथा उनके बड़े–बुजुर्ग किस प्रकार उनके साथ व्यवहार करते हैं यह सब निर्धारित करते हैं। इसके अतिरिक्त वह उन अनेक विधियों के बारे में भी बात करते हैं जिनमें आधुनिक बाल्यावस्था उनमें से बहुत से बच्चों के लिए उचित प्रतीत नहीं होती है, जिनमें वह रहते हैं तथा यह कैसी होनी चाहिए तथा इसे किस प्रकार बदला जा सकता है? इसकी भी चर्चा करते हैं।

जोहनहाल्ट (1974), एस्केप फ्रॉम चाइल्डहुड

ऐसे अनेक तरीके रहे हैं जिनमें बाल्यावस्था को सभ्यता के इतिहास में विभिन्न कालों के अन्तर्गत समझने का प्रयास किया गया है। अतः बाल्यावस्था एक ऐसी अवधारणा है जो वयस्कों के दृष्टिकोण से विकसित होती है और यह समाज में बढ़ते लघु प्रौढ़ों (बच्चों) को समझने का तरीका है।

v) **विभिन्न संस्कृतियों में बाल्यावस्था (Childhood in different cultures)**: इतिहास में न केवल विभिन्न चरणों में, बल्कि संस्कृतियों के बीच भी बच्चों की सामाजिक स्थिति और भूमिकाओं में एक परिवर्तन देखा गया है। ये परिवर्तन ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच, विभिन्न समुदायों के बीच और विभिन्न देषों के बीच दिखाई देते हैं। कुछ अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी स्थानों की तुलना में बच्चों और वयस्कों के बीच कम अंतर है। यह कहा जाता है कि "किषोरावस्था" (adolescence) को बाल्यावस्था से एक पृथक चरण के रूप में नहीं देखा जाता है।

जैसे ही बच्चा वयस्क भूमिकाएँ निभाने के लिए शारीरिक रूप से परिपक्व हो जाता है, तो वह वयस्क भूमिकाएँ ग्रहण करना शुरु कर देता है। उदाहरण के लिए, वे कमाना या काम करना शुरु कर देते हैं। वयस्कों जैसे कपड़े पहनते हैं और कम आयु में ही उनका विवाह हो जाता है। यह तर्क दिया जाता है कि किषोरावस्था (बाल्यावस्था से वयस्कावस्था तक के संक्रमण की अवस्था के रूप में) की अवधारणा हाल ही में भारत और अनेक अन्य देषों में अस्तित्व में आई है। इसका अर्थ है कि यह सब पष्चिमी दुनिया के कुछ देषों की संस्कृति और मूल्य प्रणाली (value system) पर आधारित तीव्र शहरीकरण और वैष्वीकरण के कारण हुआ है। ऐसे तर्क भी हैं जो बाल्यावस्था (विशेषकर किषोरावस्था) को शहरीकरण और वैष्वीकरण की संस्कृति के सृजन के रूप में विश्लेषण करते हैं।

अंग्रेजी शब्द "चाइल्ड" टयूटनी मूल और गर्भ के लिए गाथिक शब्द से आया है। अंग्रेजी शब्द "बेबी" षिषु द्वारा निकाली जाने वाली शुरुआती ध्वनियों "बी–बी" या "बा–बा" से मिलती–जुलती (साम्य रखने वाली) ध्वनियों से निकला है। अंग्रेजी में षिषु के लिए भी बेबी शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसका प्रयोग उस व्यक्ति को परिभाषित करने के लिए किया जाता है जो बोल नहीं सकता षिषु यानि इंफेंट (infant) (इन (in) – नहीं, (fans) बोलना)।

जापानी भाषा में नवजात षिषु को "अका–चान" (aka-chan) (अका – लाल, और चान – बच्चे को दी गई उपाधि) कहते हैं और इसका कारण है कि बच्चे की त्वचा का रंग लाल होता है।

यदि हम बच्चे की विभिन्न समाजों के अनुसार बच्चे के अर्थ को जानना चाहते हैं तो बेहतर होगा कि बाल्यावस्था के विचार के इतिहास को देखें। बाल्यावस्था शब्द का अर्थ है कि जैसा "बच्चे होना"। बीसवीं शताब्दी के अंत तक बाल्यावस्था के विचार पर एक अलग स्वाभाविक श्रेणी के रूप में बहुत ही कम ध्यान दिया गया था। सांस्कृतिक मानकों और अपेक्षाओं के अनुसार भी बाल्यावस्था की परिभाषा में भिन्नताएँ हैं।

कई समाजों में बच्चे शब्द का प्रयोग न केवल रक्त संबंध को सूचित करने बल्कि एक प्रकार की निर्भरता की स्थिति को दर्षाने के लिए भी किया जाता है। पहले बच्चे अपने माता–पिता की बजाए प्रायः परिवारों / कुटुम्ब में रहते थे और उन्हीं से जुड़े होते थे। बाल्यावस्था का प्रारंभ कहीं जन्म से और कहीं दुग्धपान की आयु की समाप्ति से, मध्ययुगीन यूरोप में कभी–कभी 3 वर्ष की आयु से माना जाता है। मध्ययुगीन यूरोपीय समाज शैशवास्था की समाप्ति सात वर्ष आयु को मानता है जो एक छोटे व्यक्ति (बच्चे) की कुछ घरेलू तथा औद्योगिक कार्यों को करने की क्षमता के प्रारंभ से जुड़ा है। अठारहवीं सदी के दार्षनिक जीन जैक्स रूसो ने बाल्यावस्था को जन्म से बारह वर्ष की आयु के बीच माना है। अब आप समझ सकते हैं कि एक बालक की सार्वभौमिक परिभाषा कितनी कठिन है।

उपर्युक्त चर्चाएँ बाल्यावस्था को परिदृश्यित करने के विभिन्न तरीकों पर प्रकाष डालती हैं। ये बच्चों के इन वयस्क विचारों में कुछ परस्पर–विरोधों, भ्रमों, समस्याओं और उदासीनता पर भी प्रकाष डालती हैं।

इसके अतिरिक्त, इन परिचर्चाओं के साथ अध्ययन और जानकारी बतलाती है कि बच्चों के जीवन और अनुभवों के कई पहलू हैं। ये वयस्कों के बच्चों के प्रति दृष्टिकोण में कुछ विरोधाभास, भ्रम, समस्याएँ और असहिष्णुता भी रेखांकित करती हैं। विभिन्न अवधियों और समाजों में बच्चों के अनुभवों में विभिन्नताएँ और अलगाव हैं। ये इतने भिन्न हैं कि बच्चे

अथवा बाल्यावस्था के लिए कोई एक विचार रखना कठिन है। फिर भी, हम एक प्रौढ़ के रूप में बाल्यावस्था को एक श्रेणी के रूप में देखते हैं। जैसा कि हम इस भाग के आरंभ में पढ़ चुके हैं, कि इस प्रकार की दृष्टि बच्चों के अनुभवों की परानुभूतिक समझ (emphetic understanding) पर आधारित न होकर सृजनात्मक और निर्माणात्मक होती है। यह समाज के एकरूप और तुच्छ दृष्टिकोण द्वारा आकार लेती है जो बच्चों के जीवन पर बहुत गहराई से प्रभाव डालता है। बच्चों के अवलोकन करने का यह तरीका वयस्कों के अनुसार बाल्यावस्था का निर्माण प्रतीत होता है।

वयस्कों के रूप में जो भी विद्यालय के अध्यापक हैं, उनका भी इस प्रकार के विचारों से समाजीकरण होता है। इससे हम बच्चों को एक समान वेशभूषा (रूप) में देख पाते हैं न कि ऐसे अलग लोगों के रूप में देखते हैं, जिनके पास विविध अनुभव, रुचियाँ, अधिगम शैलियाँ और ज्ञान हैं। हम प्रायः बच्चों को उस तरह से बनने को मजबूर करते हैं जिस तरह से हम उन्हें बनाना चाहते हैं जो कि बच्चों के विकास को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। अध्यापकों के रूप में हम इस इकाई में बच्चों के अनुभवों के साथ एक परिचय विकसित करने का प्रयोग करेंगे ताकि हम उन लोगों के बारे में जिन्हें हम पढ़ाते हैं, अपने विचारों पर प्रष्न कर सकेंगे। साथ ही हम बच्चों के बारे में अपनी जानकारियों की सीमाओं से भी परिचित होंगे।

**क्रियाकलाप I**

उपर्युक्त चर्चाओं को ध्यान में रखते हुए, निम्नलिखित प्रश्नों के बारे में विचार कीजिए:

क) क्या कोई एक तरीका है जिसके अंतर्गत हम बच्चे और बाल्यावस्था को परिभाषित कर सकते हैं? क्यों अथवा क्यों नहीं?

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

ख) बाल्यावस्था के बारे में चर्चाओं के कम से कम दो विषय बताइए।

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

बच्चे और वयस्क के बीच अंतर का अध्ययन करने से पहले आइए वयस्क का अर्थ जानने का प्रयास करें। **वयस्क** वह व्यक्ति या सजीव प्राणी है जो सापेक्षिक रूप से परिपक्व आयु का होता है विशिष्ट रूप से यौन परिपक्वता और जननात्मक आयु की प्राप्ति से जुड़ा होता है। वयस्कावस्था में प्रवेष की विधिक परिभाषाएँ भिन्न–भिन्न हैं जो 16–21 वर्ष के बीच की आयु मानी जाती है और यह विचाराधीन क्षेत्र, समुदाय या देष पर निर्भर करती है।

## 9.3.3 एक बच्चे और एक वयस्क के बीच अंतर

*स्थापित अंतर?*

हममें से अधिकांष यह सोचते हैं कि "**आयु**" वयस्कों और बच्चों के बीच मुख्य अंतर है। कई सोचते हैं कि **शारीरिक और मानसिक परिपक्वता** वयस्कों और बच्चों के बीच अंतर को व्यक्त करती है। यह भी मानना है कि **स्वतंत्रता/आत्म–निर्भरता** एक विशेषता है जो दोनों के बीच अंतर करती है। तथापि, यदि हम स्वयं से निम्नलिखित प्रष्न पूछें तो हम अपने उत्तरों में छिपे इन अंतरों के बारे में कुछ धारणाएँ और व्याख्याओं को देख सकते हैं।

मानसिक और शारीरिक परिपक्वता क्या है? यह कौन निर्धारित करता है?

बच्चों की अपरिपक्वता का निर्णय कौन लेता है? किन मानदंडों पर ऐसा किया जाता है? कौन इन मानदंडों को मूर्त रूप देता है?

क्या आपके विचार में वयस्क बच्चों से श्रेष्ठ होते हैं? आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि वयस्क बच्चों से बेहतर होते हैं?

एक ऐसे समाज के बारे में सोचिए जहाँ सभी निर्णय बच्चे लेते हैं और नियंत्रण अपने हाथ में रखते हैं। आप ऐसे समाज में वयस्कों को किस स्थान पर रखेंगे? क्या उन्हें "परिपक्व" माना जाएगा? क्या वयस्क–बच्चे मानदंड विपरीत हो जाएँगे?

किसे उच्च माना जाएगा? इस श्रेष्ठता (उच्चता) का निर्धारण करने का मानदंड कौन तय करेगा?

क्या आप जानते हैं कि कुछ विचारक मानते हैं कि बाल्यावस्था वह श्रेणी है जिसे वयस्कों द्वारा छोटों पर अपनी उच्चता को वैध ठहराने के लिए निर्मित किया गया है?

*दृश्टित अंतरः*

*प्रत्येक की अवधारणा*

एक दिन दो भाइयों, रवि (7 वर्ष) और राहुल (11 वर्ष) के बीच झगड़ा हुआ।

रविः मैं पिताजी को बताऊँगा और वो तुम्हारी पिटाई करेंगे?

राहुलः जा और अभी जा के कह, नासमझ बच्चे।

इससे हम समझ सकते हैं कि छोटे बच्चे सोचते हैं कि छोटों पर कोई भी "नियंत्रण" रखने के लिए वयस्क (पिता) के पास "प्राधिकार" और "षक्ति" है। इसलिए वह सोचता है कि पिता उसके बड़े भाई को सीधा करने के लिए उसकी पिटाई कर सकते हैं।

क्या आपके विचार में सारे बच्चे ऐसा ही सोचते हैं?

बताइए कि वे ऐसे क्यों सोचते हैं? शायद इसलिए कि उन सभी को वयस्कों द्वारा इस तरह नियंत्रित किया जाता है और सभी को वह सब करने के लिए कहा जाता है या विवष किया

जाता है जिन्हें वे नहीं करना चाहते या वयस्कों द्वारा उन्हें इसी प्रकार दंडित किया जाता है। क्या आपके विचार में बच्चों पर निरंतर वयस्कों के भय की छाया होती है और वे उनसे डर कर रहते हैं? क्या ऐसा ही प्रतीत होता है? क्या यह अच्छी व खुषहाल स्थिति है? रवि के मामले में वयस्क की अवधारणा शक्ति, नियंत्रण और भय से जुड़ी है। बच्चों द्वारा नियंत्रित समाज में आपके विचार में स्थिति क्या और कैसी होगी? हो सकता है वयस्कों को इसी तरह तंग किया जाए? बच्चे और वयस्क के बीच मूलभूत अंतर विष्व के बारे में उनके विचार और समीक्षात्मक चिंतन से सीखने की योग्यता पर निर्भर करता है।

यदि एक वयस्क दूसरे वयस्क को पीटता है तो आपके विचार में क्या होगा? संभावना तो यही है कि दूसरा वयस्क उसे पलट कर मारेगा। अन्य वयस्क इसके बारे में क्या करेंगे? सभी उस वयस्क की भर्त्सना या निंदा करेंगे जिसने पीटना प्रारंभ किया। यदि एक वयस्क यही एक बच्चे के साथ करता है तो क्या होगा? बच्चा रोना प्रारंभ कर देगा शायद इसके सिवाय वह कुछ नहीं करेगा। इसके बारे में अन्य वयस्क क्या कहेंगे? संभवतः कुछ नहीं। हो सकता है कि यह कह कर इसे उचित भी ठहराएँ कि किसी न किसी तरीके से आपको बच्चे को काबू में रखना होगा।

यदि आप राहुल यानि कि उसके बड़े भाई के जवाब पर ध्यान देगें तो आपको अहसास होगा कि उसने आयु का लाभ उठाया है। जबकि उसमें और वयस्कों में कम अंतर है और "पिता" का भय समाप्त होता नज़र आता है। समय के साथ यह भी उसका वयस्कों के तरीकों का समाजीकरण और संस्कृति–संक्रमण है जिससे वह शायद निष्चित महसूस कर रहा है। राहुल यहाँ भी आभ्यंतीकरण कर चुका है कि औसत वयस्कों की बच्चे के बारे में संकल्पना यह होती है बच्चा "नादान" या "अपरिपक्व" होता है।

## दृष्टिकोण में नवीनता

**चित्र 9.1: एक बच्चे का वस्तुओं के प्रति दृष्टिकोण**

इस स्थिति में बच्चे को जो पसंद है उसे वही चाहिए। वह अपने स्वास्थ्य के बारे में नहीं सोच रहा। यह सोच अल्पकालिक या क्षणिक होती है अर्थात वह वर्तमान की सोच रहा है और अधिकांषतः अपनी ज़रूरत के बारे में सोच रहा है जबकि उसके पिता आगे की सोच रहे हैं अर्थात उनकी दीर्घकालिक सोच है। एक बच्चा विष्व या दुनिया को अपनी नई और नवीन दृष्टि से देखता है। बच्चे सीखने और खोज–बीन (अन्वेषण) करने में दिलचस्पी रखते हैं जबकि वयस्क चाहते हैं कि वे केवल चुनिंदा चीजें ही सीखें; वास्तव में वयस्क चुनने और यह निर्धारित करने कि बच्चे को क्या करना चाहिए, की शक्ति अपने पास रखते हैं।

चित्र 9.2: एक बच्चे का स्वाभाविक प्रष्न

बच्चे हमेषा प्रष्न पूछते रहते हैं और उनके उत्तर भी चाहते हैं। माता–पिता जिन प्रष्नों का उत्तर देना चाहते हैं केवल उन्हीं प्रष्नों के उत्तर देते हैं। यह कुछ विचारणीय प्रष्न हैं:

- क्या आपने बच्चे को ऐसा प्रष्न पूछते सुना है जो अत्यंत कल्पनात्मक हो? वह प्रष्न क्या था?
- क्या किसी के पास उस प्रष्न का उत्तर था?
- क्या उत्तर वास्तविकतापूर्ण और उचित था?

**बोध प्रष्न**

**टिप्पणीः** क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) बच्चे और वयस्क के बीच अंतर को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

## 9.4 वयस्क–बच्चे के बीच संबंध

वयस्क और बच्चे के बीच अत्यंत महत्वपूर्ण संबंध है। संबंधों के बारे में प्रथम षिक्षा का प्रारंभ परिवार से ही होता है। माता–पिता के नाते, आपको बच्चों के प्रति अपने प्यार को व्यक्त करना चाहिए। षिषु अवस्था में बच्चे सुरक्षित महसूस करते हैं और उनके रोने पर जब माँ

अनुक्रिया करती है तो उसे वे समझते हैं और अपनी बदलती ज़रूरतों को सटीक रूप से दर्षाते हैं। भले ही षिषु अपनी ज़रूरतों को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता, किन्तु उसकी ध्वनियाँ, रोना और शरीर के हाव–भाव उसकी आवष्यकताओं को दर्षाते हैं। जब माँ षिषु की अनुभूतियों और भावनाओं को समझने लगती है तभी एक सुरक्षित लगाव विकसित होता है। दूसरे शब्दों में, जब माँ षिषु की आवष्यकताओं के प्रति उचित अनुक्रिया दर्षाती है और अपेक्षा के अनुसार काम करती है तब षिषु सुरक्षित और संतुष्ट महसूस करता है। यदि माता–पिता अपने बच्चों के अनुरूप ढल जाएँ, उनकी आवष्यकताओं को पूरा करें और उन्हें परिपोषण प्रदान करें तो लगाव में सुरक्षा की भावना होगी। षिषु के लगाव की गुणवत्ता उसके भावी विकास के बारे में बताती है। जिन छोटे बच्चों को शैशवावस्था से सुरक्षित लगाव प्राप्त होता है उनके दूसरों के साथ खुषहाल और अच्छे संबंध स्थापित होने के अवसर बेहतर होते हैं।

जब बच्चे शैशवावस्था से घुटनों के बल चलने वाली अवस्था (toddlerhood) में जाते हैं तब अभिभावक–बच्चे के संबंध में बदलाव आना प्रारंभ हो जाता है। शैशवावस्था के दौरान माता–पिता की प्रमुख भूमिका बच्चे की देखभाल करने, खाना खिलाने, नहलाने धुलाने, उसकी साफ–सफाई और सुलाने की रोजमर्रा की आवष्यकताओं के इर्द–गिर्द ही सीमित होती है। जब बच्चा बोलना और चलना शुरु कर देता है तब माता–पिता उसके सामाजिक व्यवहार को आकार देने का प्रयास करते हैं। संक्षेप में, माता–पिता, अध्यापक या पोषक बन जाते हैं। प्रारंभिक विद्यालयी वर्षों के दौरान, बच्चे की रूचि अपने सहभागी समूहों के साथ बढ़ने लगती है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि वे अपने माता–पिता को नापसंद करने लगते हैं। इस अवस्था में, बच्चे का सामाजिक संसार बड़ा या विस्तृत हो जाता है इसमें और अधिक लोग और घर से बाहर के परिवेष भी शामिल हो जाते हैं।

किषोरावस्था में प्रवेष करते ही बच्चा आजादी चाहता है। वह माता–पिता के प्राधिकार को चुनौती दे सकता है। अनेक माता–पिता को प्रारंभिक किषोरावस्था एक परेषानीपूर्ण अवस्था लगती है। परंतु उत्तर–किषोरावस्था में अधिकांष बच्चे अपने माता–पिता के काफी नजदीक अनुभव करते हैं।

विकास की सभी अवस्थाओं में माता–पिता और बच्चे के बीच संबंध उनकी पालन–पोषण की शैली पर निर्भर करता है।

**चित्र 9.3: पालन–पोषण की प्राधिकारपूर्ण शैली**

ऊपर के चित्र में माता–पिता के पालन–पोषण की प्राधिकारपूर्ण शैली देखी जा सकती है। **प्राधिकारपूर्ण माता–पिता** अपने नियमों के प्रति अत्यंत कठोर होते हैं। वे चाहते हैं कि बच्चे बिना कुछ पूछे उनकी आज्ञा का पालन करें। वे शारीरिक दंड देने में विष्वास करते हैं। इस शैली में पले–बढ़े बच्चे अक्सर चिड़चिड़े, बदमिज़ाज, दुखी होते हैं। यदि स्नेह रहित और पालन–पोषण की यही शैली बच्चे के लालन पोषण में जारी रहती है तो बच्चे में समाजविरोधी और विद्रोही प्रवृत्तियाँ देखी जाती हैं।

**इच्छानुवर्ती माता–पिता** के बच्चे अनुषासनहीन, ग़ैर–जिम्मेदार और अशिष्ट हो सकते हैं। ऐसे परिवार में बच्चा बड़ों की तरह ज़्यादा व्यवहार करता है और माता–पिता बच्चों की तरह व्यवहार करते हैं। पृथक (वियोजित) माता–पिता के बच्चे आक्रामक होते हैं और उन्हें अन्य छोटे बच्चों की तुलना में बहुत अधिक मनोवैज्ञानिक और व्यवहार संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं।

**लोकतांत्रिक माता–पिता** बच्चों को स्वयं जिम्मेदार बनना सीखने और अपने किए जाने वाले व्यवहार के परिणामों के संबंध में सोचने में मदद करते हैं। ऐसे माता–पिता अपने बच्चों को स्पष्ट और उचित अपेक्षाएँ प्रदान करते हैं और स्पष्टीकरण देते हैं कि वे अपने बच्चों से विशिष्ट तरीके के व्यवहार करने की आषा क्यों रखते हैं। वे नियमों और अपेक्षाओं का पूर्णतया अनुपालन कर यह सुनिष्चित करने के लिए अपने बच्चों के व्यवहार पर नज़र रखते हैं। ऐसा वे उत्साह व स्नेहपूर्ण तरीके से करते हैं। वे अक्सर अपने बच्चों को अच्छा बनते देखना चाहते हैं और उनके बुरे व्यवहार पर ज़्यादा ध्यान देने की बजाय उनमें अच्छे व्यवहार प्रबल करते हैं।

उदाहरण के लिए, एक बच्चा जो अपने खिलौनों को सीढ़ियों पर ही छोड़ आया है, उसे कहा जा सकता है कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था क्योंकि, "कोई उससे ठोकर खाकर गिर सकता है, चोट लग सकती है और तुम्हारा खिलौना भी टूट सकता है।" लोकतांत्रिक शैली वाले माता–पिता बच्चे की योग्यता के आधार पर उन्हें विकल्प दे सकते हैं। एक छोटे बच्चे की पसंद "लाल कमीज" या "धारीदार कमीज" हो सकती है। बड़े बच्चे की पसंद "सेब, संतरा या केला" हो सकती है। माता–पिता अपने बच्चों को दंड/सजा देना नहीं बल्कि समझाकर उनके व्यवहार का मार्गदर्षन कर सकते हैं। "तुमने अपना खिलौना शैली पर फैंका। इससे उसे चोट लग गई। हम तुम्हारा खिलौना तुम्हें तब तक नहीं लौटायेगें जब तक तुम उससे सुरक्षित रूप से खेलना नहीं सीख जाते।"

बच्चे का विकास उसके परिवार की परिस्थितियों से भी प्रभावित होता है, जैसे हर रोज या अक्सर होने वाले लड़ाई/झगड़े, तलाक, पुनर्विवाह और माता–पिता का रोज़गार। माता–पिता–बच्चे के संबंध घर की रचना में होने वाले परिवर्तनों की अपेक्षा बच्चे के मनोवैज्ञानिक विकास पर ज़्यादा महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

अन्य महत्वपूर्ण वयस्क–बच्चे का संबंध बच्चों और अध्यापकों के बीच होता है। अध्यापकों को बच्चे के दूसरे माता–पिता माना जाता है। आधुनिक समाज में घर से बाहर की षिक्षा प्रारंभिक जीवन में ही प्रारंभ हो जाती है। प्रारंभिक विद्यालयी अध्यापक के साथ बच्चों के संबंध की गुणवत्ता को विद्यालय अनुकूलन में योगदायी कारक के रूप में माना जाने लगा है। माता–पिता–बच्चे के संबंध के ही समान अध्यापक–बच्चे का संबंध बच्चों के सामाजिक और भावात्मक विकास के संदर्भ में विनियामक का काम करना प्रतीत होता है। वस्तुतः कई क्षेत्रों में बच्चों की प्रारंभिक सक्षमताओं का विकास अध्यापक–बच्चे के संबंध की गुणवत्ता से जुड़ा है।

ऐसी स्थितियाँ भी आती हैं जब बच्चे विद्यालय जाने में आना–कानी करते हैं। ऐसे में माता–पिता को निरंकुश नहीं बनना चाहिए। माता–पिता को उनकी अनिच्छा के कारण जानने के प्रयास करने चाहिए। यहाँ माता–पिता को परामर्षदाता का काम करना चाहिए। परिकलन अथवा संगणना अच्छा उपाय नहीं हो सकता।

माता–पिता और किशोरों के बीच संबंध भी अत्यंत महत्व रखता है। हाल ही के अधिकांष अध्ययन बच्चों पर केन्द्रित हैं। क्या आप अपने माता–पिता की बात मानोगे? आप किसकी सलाह लेंगे? दोस्तों की या माता–पिता की। सलाह लेने के लिए, बड़ों की सलाह लेना बेहतर होता है। क्योंकि बड़े लोगों की सामान्य बुद्धि अपेक्षाकृत बेहतर होती हैं और ऐसा जीवन में हुए अनुभवों के कारण होता है। निर्णय लेना और चुनना वे दो तरीके हैं जिनमें व्यक्ति स्वयं को और अपने भविष्य को बनाते हैं। कई बार माता–पिता को किशोरों से निपटने में समस्या अनुभव होती है। किशोर हमेषा अपनी ही दुनिया में होते हैं। आइए, वयस्क–किशोर के संबंधों के बारे में कुछ पता लगाएँ:

- जिन किशोरों का पालन–पोषण प्रोत्साहक एवं उत्प्रेरक पारिवारिक परिवेष में होता है उनके शैक्षिक परिणाम बेहतर होते हैं।
- प्रोत्साहन एवं उत्प्रेरक घर के माहौल वाले किशोरों में जोखिमयुक्त व्यवहार कम पाया जाएगा।
- प्रारंभिक किशोरावस्था की अवधि में उच्च गुणवत्तापूर्ण माता–पिता–किशोर संबंध बेहतर मनोवृत्ति से जुड़ा है।

**बोध प्रष्न**

**टिप्पणी:** क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

2) माता–पिता की पालन–पोषण की कुछ सकारात्मक शैलियों को सूचीबद्ध कीजिए।

..................................................................................................................................

..................................................................................................................................

..................................................................................................................................

..................................................................................................................................

..................................................................................................................................

..................................................................................................................................

## 9.5 बाल्यावस्था

### 9.5.1 बाल्यावस्था की सामान्यताएँ

जो बच्चे पोषक परिवेषों में बड़े होते हैं वे सामान्यतया प्रत्येक काम में रचनात्मक रूप से भाग लेते हैं और सफल रहते हैं। छोटे बच्चे सीखने के इच्छुक होते हैं। एक समानता जो सभी बच्चों में होती है वह है **उनके बारे में सकारात्मक भावना रखने की आवष्यकता**। यह विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि जो उसके बारे में सकारात्मक भावना रखते हैं वह अपने हमउम्रों के साथ सहायक मैत्रीपूर्ण और सहयोगी होते हैं। दूसरी ओर, निम्न स्तर

का आत्मसम्मान, खराब मानसिक स्वास्थ्य, निम्न शैक्षिक उपलब्धि और अपचार से संबंधित है। जो अध्यापक बच्चों को समझते हैं, उसकी विशेषताओं से अवगत होते हैं, उनके प्रति अनुक्रिया करते हैं, और जानते हैं कि समर्थनकारी ढंग से किस प्रकार उनको चुनौती दे सकते हैं, वे इस सकारात्मक स्वभावना में योगदान देते हैं।

अन्य समानता जो सभी बच्चों में होती है वह है **दृश्यित विकास और मस्तिष्क के विकास के अनुक्रम के बीच संबंध**। जीवन के प्रथम वर्ष में संवेदी और भाषायी विकास की तुलना में मस्तिष्क का विकास अत्यंत तीव्र गति से होता है जबकि दो या तीन वर्षों तक संज्ञानात्मक विकास चरम पर होता है।

बच्चों के बीच अन्य समानता है **खेल की आवष्यकता**; जो संसार के बारे में जानने और उसे समझने के साधन के रूप में काम करता है। खेल दक्षता को बढ़ावा देता है; विचारषक्ति की योग्यताएँ स्पष्ट होती है, तब यह संज्ञानात्मक विकास को आगे बढ़ाता है। इसमें भाषा शामिल होती है। यह नए प्रयोगों के लिए प्रोत्साहित करता है। इसमें शारीरिक गतिविधि शामिल होती है। यह बच्चों की भावनाओं के माध्यम से काम करने में मदद करता है; और अक्सर यह समाजीकरण की गतिविधि होती है। सबसे बड़ी बात है कि यह बच्चों को उनके जीवन के अनुभवों को आत्मसात् और एकीकृत करने की राह है।

बच्चों में कई विशेषताएँ सम्मिलित होती हैं और निष्चित रूप से उनमें स्नेह, स्वीकृति, संगति, सम्मान और समुचित चुनौतियाँ आधारभूत आवष्यकताएँ होती हैं। अधिकांष बच्चे विष्वास की यह भावना रखते हैं कि संसार और उसके लोग स्नेही और दयालु हैं और वे आनंदपूर्वक और उत्साह से संसार को चलाएँगे। संबंध विकसित करने में भी कई समानताएँ हैं। प्रारंभिक जीवन में छोटे बच्चे अजनबियों को देखकर भयभीत हो सकते हैं लेकिन प्रारंभिक बाल्यावस्था में वे अन्तःक्रिया करना सीख जाते हैं। किषोरावस्था की अवधि में यह सीखने और विपरीत लिंग के सदस्यों के साथ संबंध विकसित करने की दिषा में परिवर्तित हो जाता है।

### 9.5.2 बाल्यावस्था की विविधताएँ

प्रारंभिक विद्यालय के अध्यापक के रूप में आप न केवल कक्षा में विद्यार्थियों की बहुत–सी समस्याओं का सामना करते हैं बल्कि विविध पृष्ठभूमियों से आए बच्चों के साथ काम करने की चुनौती भी आपके समक्ष होती है। बच्चों के वर्ग, जाति, जनजाति, कार्य और क्षेत्र के संदर्भ में भिन्नताएँ होती हैं। तब बच्चा विद्यालय आना प्रारंभ करता है उस समय तक वह परिवार और अपने समुदाय की संस्कृति को पहले से ही आत्मसात् कर चुका होता है। कक्षा में तरह–तरह की सांस्कृतिक भिन्नताओं के साथ अध्यापक की अपनी संस्कृति इस बहुसांस्कृतिक स्थिति में बाधा डालती है।

सुश्री. सुकन्या कलकत्ता के निगम विद्यालय में तीसरी कक्षा की अध्यापिका है। उनकी कक्षा में तीन बच्चे – मोहन, मणि और श्याम हैं जो हाल ही में ही अपने परिवारों के साथ कोलकाता में स्थानांतरित हुए हैं। बच्चे थोड़ी–बहुत बंगाली समझते हैं लेकिन स्वयं को अभिव्यक्त नहीं कर पाते। उन्हें अंग्रेजी भी नहीं आती। कक्षा के अन्य बच्चे उनकी भाषा को लेकर उनका मजाक उड़ाते हैं और उनके साथ खेलते भी नहीं। उनका गहरा रंग बच्चों द्वारा मजाक बनाए जाने का अन्य कारण है। अतः ये तीनों बच्चे आपस में ही बातचीत करते हैं और विद्यालय में सुखद महसूस नहीं करते। सुश्री. सुकन्या सोचती है कि स्थिति ठीक है और धीरे–धीरे स्थिति में सुधार हो जाएगा।यदि

स्थिति बेहतर नहीं भी होती तो भी क्या? क्योंकि वह सोचती है कि जल्दी ही उनका स्थानांतरण हो रहा है और उन्हें ज़्यादा परेशान नहीं होना चाहिए।

अन्य कक्षा की अध्यापिका श्रीमती नज़मा को यह स्थिति अत्यंत परेशानीपूर्ण लगती है। उन्होंने अब मोहन, श्याम और मणि के साथ समस्या पर बातचीत करना प्रारंभ कर दिया है ताकि वे उपेक्षित महसूस न करें। वह उनके साथ बातचीत करने के लिए उनके और बंगाली और अंग्रेजी के बीच सेतु बनने के लिए उनकी भाषा के मूल शब्द सीखने का प्रयास कर रही है, जो बच्चे उन तीनों का मज़ाक उड़ाते हैं उन बच्चों के साथ भी बातचीत कर रही हैं? ताकि वे इन तीनों बच्चों की स्थिति को समझ सकें। उसके प्रयासों से स्थिति में सुधार दिखाई देने लगे हैं। श्रीमती नज़मा ने इन तीनों बच्चों के माता–पिता को सुझाव दिया है कि वे घर के आसपास उनके मित्र बनाने में अपने बच्चे की मदद करें।

आपके विचार में श्रीमती नज़मा के सुझाव किस प्रकार सहायक होंगे?

सुश्री. सुकन्या के रवैये के बारे में आप क्या कहेंगे?

बच्चों की संज्ञानात्मक विकासात्मक अवस्थाओं के अलावा, बच्चे अपने मित्रों और सामाजिक परिवेष से प्राप्त अनुभवों के माध्यम से अपनी पहचान और अभिवृत्तियाँ विकसित करते हैं। जब वे षिषु घुटनों पर चलने वाले (toddlers) होते हैं तब वह आत्म–जागरूकता विकसित करते हैं और यह अवधि आत्म–जागरूकता विकसित करने का प्रथम चरण है। इस अवस्था में वह अपनी पहचान के बारे में समझना प्रारंभ कर देते हैं। दो वर्ष की आयु में बच्चे शारीरिक भिन्नताओं को पहचानने लगते हैं और उनकी खोज बीन करते हैं। जब वे रंगों के बारे में सीखते हैं तो उस अवधारणा को वह अपनी त्वचा के रंग पर लागू करते हैं। वे कई प्रष्न पूछेंगे? तीन–चार वर्ष की आयु तक बच्चे लोगों में रंग और शारीरिक संरचना की भिन्नताओं पर ध्यान देते हैं।

**चित्र 9.4: एक बच्चे का तुलनात्मक दृष्टिकोण**

क्या आपने कभी जीवन में इस तरह के प्रष्नों का सामना किया है? आप इन प्रष्नों के प्रति क्या अनुक्रिया दर्षाएँगें? पाँच–छह वर्ष की आयु में बच्चे शारीरिक अंतरों (भिन्नताओं) के

बारे में निरंतर प्रष्न पूछते हैं? छह वर्ष की आयु तक अनुचित और उचित की अवधारणा से परिचित हो जाते हैं और मुद्दों से निपटने का प्रयास करते समय अक्सर इन अवधारणाओं का प्रयोग करते हैं। सात–आठ वर्ष की आयु में बच्चे एक समय में एक साथ बहुत से गुणों पर विचार करते हैं। वे संसार के बारे में जानने में दिलचस्पी रखते हैं। उन्हें सटीक सूचना देने का यह सबसे सही समय है ताकि वे सोचने की विद्यालयपूर्व (pre-school) विधियों से निकलकर आगे बढ़ सकें।

बच्चे दूसरों के साथ तुलना करेंगे। बच्चों को अपनी असमानताओं को स्वीकार करना और समझाना, माता–पिता और अध्यापकों का कर्त्तव्य है। हम सभी बच्चों में सकारात्मक स्व–संकल्पना विकसित करने और मदद करना चाहते हैं। यदि इस सकारात्मक स्वभावना और अन्य को फलने–फूलने व विकसित होने दिया जाए तो आज के बच्चे ऐसे वयस्क बनेंगे जो असमानताओं को स्वीकार करेंगे और उसकी पुष्टि भी करेंगे। जातिगत और सांस्कृतिक विविधता को प्रतिबिम्बित करने वाली पुस्तकें और खिलौने दो समस्याओं को हल करते हैं। वे न केवल बच्चों को उनके बारे में, रंग के बारे गर्व अनुभव करने में मदद करते हैं बल्कि वे असमानताओं के बारे में सभी बच्चों को सकारात्मक महसूस करने में भी सहायक हो सकते हैं।

भाषा और संस्कृति में भी बच्चों को विविधता दृष्टिगत हो सकती है। अपनी संस्कृति के बारे में बच्चों को सिखाने का सर्वोत्तम तरीका है कि बाल्यावस्था के वर्षों से ही उन्हें उनकी मातृ–भाषा में सिखाना। षिक्षक को अंग्रेजी के अर्जन को बढ़ावा देते समय उन्हें अपनी मातृ–भाषा का प्रयोग करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि कार्यक्रमों और परिवारों के बीच संबंध सुदृढ़ हो सकें। जब बच्चे सार्थक संदर्भों में कौषल विकसित है तब वे सबसे बढ़िया ढंग से सीखते हैं। बच्चे चाहे कोई भी भाषा–भाषी हो बच्चे, पहले से क्या जानते हैं और उनके पूर्व अध्ययन कैसे हैं? यह जानना ऐसे परिवेष को बढ़ावा देने में सहायक होगा जिससे सभी बच्चे सीखने में सहभागी हो सकें।

सांस्कृतिक विविधता की खोज–बीन करने की सभी संभावनाओं वाला समृद्ध परिवेष सृजित करने का प्रत्येक प्रयास किया जाना चाहिए। भिन्न–भिन्न भाषाओं के शब्दों वाला संगीत बनाना चाहिए और उन्हें विष्व भर के खेलों से परिचित कराने का प्रयास किया जाना चाहिए। लोक नृत्य और कहानी सुनाना बच्चों को अन्य संस्कृतियों से परिचित कराने के लिए विशिष्ट प्रभावी तरीके हैं।

**बोध प्रष्न**

**टिप्पणीः** क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3) बाल्यावस्था की समानताओं और विविधताओं की तुलना कीजिए।

.........................................................................................................................

.........................................................................................................................

.........................................................................................................................

.........................................................................................................................

.........................................................................................................................

.........................................................................................................................

### 9.5.3 बाल्यावस्था की विभिन्न सामाजिक वर्गों/समुदायों में संकल्पना

प्रत्येक समाज में बाल्यावस्था की अपनी–अपनी परिभाषा है। बाल्यावस्था का आधुनिक पष्चिमी अवधारणा इतिहास और संस्कृति विशिष्ट है। बाल्यावस्था को आधुनिक खोज का सुझाव सर्वप्रथम फिलिप्स अरीज (1962) ने दिया। उनका कहना था कि बच्चे वयस्कों की भाँति हमेषा एक ही काम नहीं करते।

मध्ययुगीन लेखकों के बाल्यावस्था संबंधी विचार बच्चों की प्रस्थिति और कर्त्तव्यों तथा परिपक्वता की विभिन्न अवस्थाओं में प्रदान होने वाले अधिकारों पर आधारित है। जैविक–मानव विज्ञानी बाल्यावस्था को मानव विकास की अवस्था के एक कार्य के रूप में देखते हैं अर्थात यह वयस्कावस्था के लिए उन्हें तैयार करती है। एलिसन जैक्स, जो बाल्यावस्था के नए समाजषास्त्र के पक्षधरों में से एक हैं, ने कहा कि काल क्रमानुसार आयु ही हमेषा बाल्यावस्था को निर्धारित नहीं कर सकती। एक समाज में हो सकता है एक दस वर्ष का बच्चा विद्यालय जाता हो या अन्य परिवार में घर का मुखिया हो। आप अपने परिवार में क्या सबसे बड़े है? क्या आपको अपने परिवार का बड़ा सदस्य होना पसंद है? यदि नहीं, तो क्यों? इस मामले में बाल्यावस्था को शरीर क्रियात्मक विकासात्मक अवस्था की बजाए सामाजिक प्रस्थिति के आधार पर परिभाषित किया जा सकता है। उन्नीसवीं शताब्दी तक मध्य वर्ग के बच्चे घरों तथा विद्यालय तक ही सीमित थे। लेकिन कई कामकाजी वर्गों के बच्चे अपने परिवारों की सहायता कर रहे हैं। *(डेविड 1990; पिंचबेक और ह्यूटी (1993))*। विकासात्मक अवस्था में बाल्यावस्था को वयस्कावस्था की दिषा में एक प्रक्रिया माना जाता है। विकासात्मक अवस्था और शरीर क्रियात्मक स्थिति के रूप में बाल्यावस्था की परिभाषा इस तथ्य पर प्रकाष डालती है कि यह अभी भी सामाजिक प्रस्थिति है।

## 9.6 विशिष्ट समुदाय के बच्चों का प्रालेख (प्रोफाइल)

विभिन्न प्रालेखों (प्रोफाइलों) पर दृष्टिपात करने से पहले हम अपने घर के परिवेष पर एक नज़र डाल सकते हैं। क्या आपके घर में आपके माता–पिता लड़के और लड़कियों के साथ समान व्यवहार करते हैं। यदि नहीं, तो वे किस प्रकार से उनमें भेद करते हैं? और क्यों?

आइए, नीचे दिए गए विभिन्न समुदायों के बच्चों के कुछ प्रालेखों पर चिंतन करें:

### 9.6.1 खानाबदोष (यायावर) समुदाय का बच्चा

छह वर्षीय दादा साहेब मुरे महाराष्ट्र से खानाबदोष (यायावर) समुदाय का बच्चा है। उसका परिवार और समुदाय जीविका अर्जित करने के लिए एक गाँव से दूसरे गाँव में जाता है और सफाई और छोटे–मोटे काम करता और भीख माँगता है। कई पीढ़ियों से उसके परिवार और समुदाय की जीवन शैली यही है। उनकी जाति को जाति की हिन्दु व्यवस्था के परंपरागत प्रचलन में यही कार्य सौंपा गया है। कई पीढ़ियों में कोई भी विद्यालय नहीं गया क्योंकि इसमें उनको कोई फायदा नहीं होता। उनमें से कुछ ने विद्यालय में नामांकन कराया लेकिन अध्यापकों और गाँव की उच्च जाति द्वारा निरंतर अपमानित होने के कारण उन्होंने विद्यालय जाना छोड़ दिया। एक कारण यह भी है कि जब वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं तब विद्यालय उनके साथ स्थानांतरित नहीं होता। तथापि, जहाँ दादा साहेब का परिवार उस समय जिस गाँव में रुका हुआ था उस गाँव के विद्यालय में उसका नामांकन कराया गया। "अन्य" बच्चे जहाँ पढ़ते हैं वह भी वहीं पढ़ना चाहता है। उसके अध्यापक उसे बहुत प्रोत्साहित व सहायता करते हैं। यद्यपि गाँव की अन्य जातियाँ इसका विरोध कर रही है। लेकिन परिवार, अध्यापक और दादासाहेब दृढ़ हैं। फिर भी, जब समुदाय एक गाँव से दूसरे गाँव में जाएगा तो दादा साहेब विद्यालय षिक्षा को किसी भी तरह से जारी नहीं रख

पाएगा। दूसरे विद्यालय में नामांकन से उसकी पढ़ाई में अंतराल आएगा। एक ऐसी विद्यालय प्रणाली की कल्पना कीजिए जिसमें दादा साहेब पढ़ सकें।

### 9.6.2 नेपाली भाषी–भुटानी बच्चे का प्रालेख (प्रोफाइल)

परिवार में औसत 6 से 8 बच्चे होते हैं। अल्प चिकित्सा देखभाल के कारण षिषु मृत्यु दर अति उच्च है। बच्चों का मार्गदर्षन करके उन्हें सिखाया जाता है और दंड तो शायद ही कभी दिया जाता है। लड़कियों का 7 वर्ष की आयु में और लड़कों की 8 या 9 वर्ष की आयु में किषोरावस्था में औपचारिक प्रवेष होता है। लड़कियों को यौवनारंभ से पहले उनकी प्रथम साड़ी दी जाती है और घर के कार्यों का दायित्व उन पर डाल दिया जाता है। जबकि लड़कों को ब्राह्मणों से जनेऊ और षिक्षाएँ मिलती हैं जो बचपन से पुरुष वर्ग में परागमन को व्यक्त करती है।

उपर्युक्त उदाहरण से आप क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं? षिक्षा सामान्यतः लड़कों को दी जाती है जबकि लड़कियों को घरेलू कार्यों तक ही सीमित रखा जाता है। भारत की स्थिति में इसकी तुलना कीजिए।

### 9.6.3 द्वंद–स्थिति में बच्चा

सोना की आयु बारह वर्ष है और वह एक ऐसे गाँव में रहती है जहाँ कुछ समय से द्वंद की स्थिति है। वह उस जनजाति की है जो सरकार द्वारा उनके क्षेत्र में औद्योगिक परियोजना लगाने के निर्णय का विरोध कर रही है। परियोजना की वजह से उन्हें अपना गाँव और वनभूमि को छोड़ना पड़ेगा। उन्हें इसकी क्षतिपूर्ति होगी किन्तु वे क्षतिपूर्ति नहीं चाहते। कुछ समय से गाँव नक्सलियों और राज्य के सषस्त्र बलों में संघर्ष को झेल रहा है। गाँव वाले महसूस करते हैं कि राज्य और नक्सली दोनों ही गलत हैं और किसी का भी साथ इसमें नहीं देना चाहते। और इसलिए दोनों पक्ष उन्हें अपना षिकार बनाते हैं। इस संघर्ष में कई लोग मारे जा चुके हैं। पिछले वर्ष तक सोना गाँव के विद्यालय में जाती थी लेकिन स्थितियों की गंभीरता को देखते हुए अध्यापकों ने स्कूल आना बंद कर दिया है। विद्यालय की हालत जर्जर है और वहाँ पढ़ाने वाला कोई भी है। काफी लंबे समय में सोना को भी घर से बाहर नहीं निकलने दिया जा रहा क्योंकि एक तो वह बच्चा है और दूसरे वह लड़की है अतः वह ज़्यादा संवेदनषील है। सोना की दादी जब अच्छे दिन थे, उन दिनों की कहानियाँ सुनाती है। वह बताती है कि जब वह छोटी थी, समुदाय के लोगों का जीवन कितना बढ़िया और शांतिपूर्ण था। वह अपनी सांस्कृतिक प्रथाओं का बखान करती है जब वे प्रकृति के भगवान की पूजा किया करते थे और उसकी प्रचुरता के लिए उसका धन्यवाद करते थे और किस प्रकार महिलाएँ घने जंगलों में जाकर घर के लिए संसाधन एकत्रित करके लाती थी। सोना को जल्दी ही शहर भेज दिया जाएगा जहाँ वह किसी संबंधी के घर काम करेगी क्योंकि उसके माता–पिता महसूस करते हैं कि यही उसके लिए बेहतर होगा।

सोना और उसके जीवन के बारे में आपका क्या विचार है?

## 9.7 बच्चों और बाल्यावस्था का अध्ययन करना

कई अनुसंधानकर्त्ता बच्चों की दुनिया को समझने के लिए उन पर अनुसंधान कर रहे हैं और दिलचस्प बात यह है कि उनमें से कई अध्यापक ही हैं। सामाजिक–वर्ग और सामाजिक–रचना के रूप में बाल्यावस्था में उभरती रूचि और मान्यता के कारण इन शोधों में वृद्धि हो रही है। अध्ययन का एक संपूर्ण क्षेत्र है जो बाल्यावस्था के अध्ययन में समर्पित है और यह अध्ययन **बाल्यावस्था अध्ययन** कहलाता है। यह एक बहु–विषयक क्षेत्र है जो आज के

बच्चों द्वारा अनुभव की जाने वाले बाल्यावस्थाओं को समझने के लिए अध्ययन के सभी क्षेत्रों का उपयोग करता है। बाल्यावस्था अध्ययन में सामाजिक विज्ञान (विशिष्ट रूप से समाजषास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थषास्त्र और नृ–विज्ञान) मानविकी (विशेष रूप में दर्षन, साहित्य, धर्म और ललित–कथाएँ) और व्यवहार–विज्ञान (मनोविज्ञान) में विद्वता सभी सम्मिलित है। इस क्षेत्र में शोधकर्त्ता जिन कुछ प्रष्नों का उत्तर प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं वे इस प्रकार के हैं:

1) **बाल्यावस्था की परिभाषाएँ**

- बाल्यावस्था की अवधारणा कालांतर (पिछले कुछ समय) में कैसे विकसित हुई?
- विभिन्न संस्कृतियों और युगों में बाल्यावस्था को किस प्रकार भिन्न–भिन्न रूप में देखा गया है?
- बाल्यावस्था की सीमाएँ बताइए? (क्या बच्चे बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं? क्या परिपक्व लोग बाल्यावस्था की परिभाषाओं की सीमांतता से ग्रसित हैं?)
- क्या बाल्यावस्था एकल श्रेणी है या बिल्कुल अलग बहुश्रेणियों से बनी है? बाल्यावस्था को परिभाषित करके वयस्कावस्था को या वयस्कावस्था को परिभाषित करके बाल्यावस्था को भी किस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है?

2) **बाल्यावस्था और विकास**

- बाल्यावस्था में शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, भावात्मक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक इत्यादि विकास के महत्वपूर्ण पहलू क्या हैं?
- संस्थान (विद्यालय, चिकित्सा केन्द्र यहाँ तक कि कानूनी प्रणालियों) बच्चों की अद्वितीय विकासात्मक आवष्यकतों को किस प्रकार प्रभावी रूप से प्रोत्साहित करते हैं?
- विकासात्मक अवधि के रूप में हमारी बाल्यावस्था के बारे में समझ, समय के साथ–साथ कैसे बढ़ती है? क्या अभी भी विभिन्न रूपों में हम इसे पूर्णरूप से समझ नहीं पा रहे हैं?

**3) बच्चे और संबंध**

- बच्चों के अपने परिवार, सहभागी समूह और अपने समुदाय के साथ संबंधों की गतिषीलता क्या है?
- किस प्रकार बच्चों के सामाजिक संबंध सकारात्मक रूप से या नकारात्मक रूप से अनुभव किए जाते हैं?
- सामाजिक संस्थाओं (जैसे विद्यालयों और धार्मिक संगठनों) में बच्चों के संबंधों की गतिषीलता क्या है?
- जानवरों और प्रकृति के साथ बच्चों के संबंधों का स्वरूप क्या है?

**4) बाल्यावस्था का ज्ञानबोध और चित्रण**

- वयस्क बच्चों और बाल्यावस्था को किस रूप में देखते हैं?
- वे बाल्यावस्था की क्षमताओं, दायित्वों और विशेषाधिकारों को किस रूप में देखते हैं?
- वे बचपन के अपने अनुभवों को किस प्रकार देखते हैं? (गृह–विरह, व्याकुल अथवा लज्जित होना, मन बहलाना)

- बच्चे स्वयं को कैसे देखते हैं?
- बच्चों और बाल्यावस्था की कला साहित्य, फिल्मों, टेलीविजन और विज्ञापन इत्यादि से षिक्षा और संचार माध्यमों के क्षेत्रों में किस तरह नियमित/दर्षाया गया है?

**5) बाल्यावस्था के अन्य मुद्दे**

- **बच्चे और षिक्षाः** बच्चों की षिक्षा संबंधी विचारणीय मुद्दे कौन से हैं?
- **बच्चे और अवकाषः** मनोरंजनात्मक गतिविधियों (खेलकूद सहित) में भाग लेना बच्चों के लिए लाभप्रद है या हानिकर?
- **बच्चे और कानूनः** क्यों न्याय प्रणालियाँ बच्चों के अपराध के षिकार होने और अपराध करने दोनों से प्रभावी रूप से निपटती हैं?
- **बच्चे और अधिकारः** बच्चे होने के नाते बच्चों को कौन–से अधिकार प्राप्त हैं? बच्चों की पसंद का किस हद तक सम्मान किया जाना चाहिए?
- **बच्चे और लिंगभेदः** बच्चों को लिंगभेद–विशिष्ट भूमिकाओं के लिए किस प्रकार समाजीकृत किया जाता है? बच्चे लिंगभेद और यौन एकात्मकता को किस प्रकार बनाते हैं इसमें जुड़े मुद्दे और सरोकार कौन–से हैं?
- कार्य जगत में बच्चों के संबंध का क्या स्वरूप है?
- संक्रमण के दौरान बाल्यावस्था किषोर बच्चे/वयस्क जगत में किस प्रकार सेतु का कार्य करते हैं और किस हद तक किषोर बच्चे होने और वयस्क होने के दोहरे बंधन में किस प्रकार जकड़े जाते हैं?

(**स्रोतः** बाल्यावस्था पर दूसरे विष्वव्यापी सम्मेलन के लिए मँगाए गए शोधपत्र http://www.inter-disciplinary.net/probing-the-boundaries/persons/childhood/ 16-12-2011)

**क्रियाविधि III**

1) ऊपर सूचीबद्ध प्रष्नों में से किसी ऐसे चार प्रष्नों की पहचान कीजिए जिनका आप अध्ययन करना चाहेंगे।

..............................................................................................................

..............................................................................................................

..............................................................................................................

..............................................................................................................

..............................................................................................................

2) आप इनका अध्ययन कैसे करेंगे?

..............................................................................................................

..............................................................................................................

..............................................................................................................

..............................................................................................................

3) आप किससे बातचीत करेंगे या किस का साक्षात्कार लेंगे?

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

4) आप किस का, क्या और कब अवलोकन करेंगे?

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

5) आपको किन संसाधनों की आवष्यकता पड़ेगी?

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

शोधकर्त्ता समस्याओं के अध्ययन करने के लिए कुछ उपकरणों का प्रयोग करते हैं जो अनुसंधान उपकरण कहलाते हैं। अनुसंधान उपकरण मूलतः वे उपकरण हैं जो शोधकर्त्ता को संगत आँकड़े एकत्रित करने में सहायता करते हैं। उपकरण मानकीकृत हो सकते हैं अर्थात् वे उपकरण पहले से ही तैयार होते हैं और कठोर परीक्षणों में गुजर चुके होते हैं। शोधकर्त्ता बिना संषोधन/परिवर्तन किए इनका प्रयोग कर सकते हैं। बुद्धि परीक्षण ऐसे उपकरणों में से है; ये उपकरण मनोविज्ञान प्रयोगषालाओं में आसानी से मिल सकते हैं और कुछ पुस्तकालयों में ये आसानी से मिल सकते हैं। उपकरणों का अन्य रूप है – शोधकर्त्ता निर्मित उपकरण – जिन्हें किसी भी शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित किया जा सकता है। इस मामले में अनुसंधान स्थिति की विशिष्ट आवष्यकताओं पर आधारित उपकरणों द्वारा ही शोध किया जाता है। ये उपकरण इस प्रकार हैंः

1) **प्रेक्षणः** अध्यापक का जर्नल/डायरी, प्रेक्षण अनुसूची, उपाख्यान रिकार्ड

2) **बच्चों के साथ अंतःक्रिया और बातचीतः** संवाद और चर्चाएँ, साक्षात्कार और प्रष्नावलियाँ

3) **बच्चों का काम और लिखाई**

ये सभी उपकरण शोधकर्त्ताओं के लिए विशेष गतिविधि के रूप में मात्र उपकरण नहीं हैं। अध्यापक विद्यार्थियों को जानने और अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया का मूल्यांकन करने के लिए कक्षाओं में प्रतिदिन इनका प्रयोग कर सकते हैं। इन उपकरणों के बारे में आप विस्तार से इस पाठ्यक्रम के **"खंड 2 : विकास को समझना"** की **"इकाई 6 बच्चों के अध्ययन की विधियाँ"** में पढ़ सकते हैं।

## 9.8 सारांष

इस इकाई में हमने बच्चे की परिभाषा तथा वह वयस्क से किस प्रकार भिन्न है, इन तथ्यों की चर्चा की। हालाँकि बच्चे की आयु सीमा के बारे में निर्धारण में एक समानता नहीं है। सामान्यतया 18 वर्ष से कम आयु वाला व्यक्ति बच्चा होता है, जब तक कि राष्ट्रीय कानून वयस्कता की पूर्व आयु को मान्यता नहीं देता है। वयस्क वह व्यक्ति है जो कानून द्वारा विनिर्दिष्ट **"परिपक्वता"** को प्राप्त कर चुका है। तथापि, हमने यह भी अनुभव किया है कि भिन्नता के इस विचार में नियंत्रण की धारणा निहित है। इसी तरह सांस्कृतिक मानकों और अपेक्षाओं के अनुसार बाल्यावस्था की परिभाषा भी भिन्न–भिन्न है।

वयस्क के साथ संबंध के संदर्भ में, बच्चा परिवार के सदस्यों के संपर्क में रहता है। उसकी प्रथम समाजीकरण प्रक्रिया उसके परिवार में प्रारंभ होती है। विकास की सभी अवस्थाओं के संबंध में पालन–पोषण की शैली पर निर्भर करता हैं इसके आगे हमने बाल्यावस्था की सामान्यताओं और विविधताओं पर चर्चा की है।

बाल्यावस्था की अवधारणा के संबंध में भिन्न–भिन्न विचार हैं। अतः विभिन्न समुदायों में बच्चों के विभिन्न प्रालेखों और बाल्यावस्था शोध के संबंध में उठाए गए कुछ प्रष्नों की चर्चा की है।

## 9.7 इकाई के अंत में अभ्यास

1) प्रारंभिक विद्यालय में बच्चों का प्रेक्षण करें और उनमें पाई जाने वाली सामान्यताओं और विविधताओं को ज्ञात करें।
2) जनजातीय समुदायों से प्रारंभिक विद्यालय के आयु वर्ग के बच्चों के समूह के कुछ प्रालेख एकत्रित करें।

## 9.9 बोध प्रष्नों के उत्तर

1) आयु, प्रत्येक की अवधारणा, अवलोकन अथवा दर्षन में नवीनता। अपने अवलोकनों में से कुछ उदाहरण दें।

2) प्रकृति से लोकतांत्रिक, प्रिय (प्यारा), बच्चों को अपने बारे में सोचने के लिए प्रेरित करना

**3) सामान्यताएँ**

- अपने बारे में अच्छा (सकारात्मक) महसूस करना
- मस्तिष्क का विकास
- खेलने की ज़रूरत
- संबंध विकसित करना

**विविधताएँ**

- विद्यालय की तैयारी का स्तर
- एकात्मकता और मनोवृत्ति में भिन्नता
- भाषायी विविधता
- सांस्कृतिक विविधता

## 9.10 पठनीय सामग्री

पियांटा, राबर्ट, सी. एवं स्टुयूलमेन, (2004), "टीचर–चाइल्ड रिलेषन्सषिप एंड चिल्ड्रनस सक्सेस इन दी फर्स्ट यीअर ऑफ स्कूल", *स्कूल साइकोलॉजी रिव्यू,* खंड 33

एरीज, फिलिप, (1962), *सेंचुरीज ऑफ चाइल्डहुड,* न्यूयार्कः विन्टेज बुक्स।

बर्क. ई. ल्यूरा (2006), *चाइल्ड डेवलेपमेंट,* (सातवाँ संस्करण), दिल्लीः पियरसन प्रिटिंस हॉल।

हॉल्ट, जॉन, (1972), *इस्केप फ्रॉम चाइल्डहुड,* भोपाल, एकलव्य।

वुलफ्लॉक, अनीता, (2004), *एजुकेषनल सायकोलॉजी,* दिल्लीः पियरसन प्रिटिंस हॉल।